National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 06-03-2024, Accepted: 30-03-2024, Published: 22-04-2024
Volume 9, Issue 2, 2024, Page No. 7-8

स्वतंत्र व्यापार नीति का महत्त्व एवं अर्द्धविकसित देशों पर उसका प्रभाव

सरिता
वाणिज्य विभाग, यूजीसी नेट, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

सारांश
स्वतंत्र व्यापार नीति, जो विभिन्न देशों के मध्य वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगाती, स्वतंत्र व्यापार नीति के नाम से जानी जाती है। एडम स्मिथ के अनुसार स्वतंत्र व्यापार नीति की धारणा का संबंध ''एक ऐसी वाणिज्य नीति से है जो घरेलू और विदेशी वस्तुओं के मध्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती है तथा जो न तो घरेलू वस्तु को किसी प्रकार की विशेष छूट देती है और न विदेशी वस्तु पर कोई अतिरिक्त भार डालती है।'' इस प्रकार स्वतंत्र व्यापार नीति किसी कृत्रिम बाधा को उत्पन्न किए बिना वस्तुओं और सेवाओं के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाह को स्वीकृति प्रदान करती है। फिर भी स्वतंत्र व्यापार नीति के लिए यह आवश्यक नहीं है कि आयातों अथवा निर्यातों पर किसी प्रकार के प्रतिबंध न हो। स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत कर तो लगाए जाते हैं किंतु उनका अभिप्राय केवल आय प्राप्त करना होता है, सरंक्षण देना या भेदभाव करना नहीं होता। 18वी तथा 19वीं शताब्दी में स्वतंत्र व्यापार के पक्ष में दिए गए तर्क व्यक्तिवाद के दर्शन पर आधारित थे। जिसकी अभिव्यक्ति जॉन लॉक, डेविड ह्यूम एवं एडम स्मिथ विद्वानों के लेखों में पाई जाती है। एड्म स्मिथ ने व्यक्तिवादियों की व्यापारिक नीति का यह तर्क प्रस्तुत करते हुए कटु आलोचना की थी कि स्वतंत्र व्यापार के कारण व्यापार में सलंग्न राष्ट्र अपनी समृद्धि में वृद्धि करने में सफल होते हैं क्योंकि व्यापार के कारण श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण संभव हो जाता है और ये दोनों सम्मिलित होकर व्यापार से लाभ के द्वार को खोलते हैं। स्मिथ ने कड़े परिश्रम के बाद यह दिखलाया कि श्रम विभाजन द्वारा प्राप्त लाभ की सीमा बाजार के विस्तार पर निर्भर करती है।

मूल शब्दः स्वतंत्र व्यापार, विनिमय, प्रतिबंध, घरेलू, कृत्रिम, अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह, सरंक्षण, भेदभाव।

स्वतंत्र व्यापार बाजार के आकार का विस्तार करके राष्ट्रों को इस योग्य बनाता है कि वे श्रम–विभाजन एवं विशिष्टीकरण के लाभों का पूर्ण शोषण कर सकें। स्मिथ द्वारा इतनी दक्षतापूर्ण चर्चित स्वतंत्र व्यापार के लाभों के बाद में उनके योग्य अनुयायियों जिनमें डेविड रिकार्ड, जॉन स्टुआर्ट मिल, का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ने और आगे बढ़ाया। फिर भी स्वतंत्र व्यापार के सबसे प्रबल समर्थक डेविड रिकार्ड थे जिन्होंने स्वतंत्र व्यापार के कारण के समर्थक मुख्य यंत्र के रूप में तुलनात्मक सिद्धांत को विकसित किया। इस प्रकार स्वंतत्र व्यापार के स्वर्णिम दिन लगभग एक शताब्दी तक रहे।

स्वतंत्र व्यापार तथा अर्द्धविकसित देशों का आर्थिक विकास

स्वतंत्र व्यापार अर्द्धविकसित देशों के आर्थिक विकास का गति निर्धारक हो सकता है। हैबरलर मामूली सरकारी हस्तक्षेप को स्वतंत्र नीति का उल्लंघन नहीं मानते हैं। उनके अनुसार ''स्वतंत्र व्यापार उदारतावाद की बाह्य व्यापार प्रणाली है। किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि एक और अप्रतिबंधित व्यापार तथा दूसरी ओर बाजार की शक्तियों के स्वतंत्र क्रियाकलाप पर निश्चित हस्तक्षेप, जैसे श्रम बाजार में हस्तक्षेप, दोनों की साथ–साथ वकालत तर्कसंगत नहीं है।'' हैबरलर ने निम्नलिखित क्षेत्रों (मार्गों) का उल्लेख किया है जिसमें स्वतंत्र व्यापार अर्द्धविकसित देशों के आर्थिक विकास की दर में त्वरित गति से वृद्धि करने के लिए उनकी सहायता करता है।

1. स्वतंत्र व्यापार से अर्द्धविकसित देश अपनी विकास योजनाओं के कार्यान्वन हेतु पूंजीगत वस्तुओं, मशीनरी तथा आवश्यक कच्चे माल का आयात करने में समर्थ हो जाता है।
2. स्वतंत्र व्यापार से ये देश विकसित देशों से आवश्यक तकनीकी जानकारी, प्रबन्धात्मक प्रतिभा, उद्यमकर्त्ता आदि का आयात करने के योग्य हो जाते हैं।
3. स्वतंत्र व्यापार अंतर्राष्ट्रीय पूंजी परिचलन, जो अर्द्धविकसित देशों के आर्थिक विकास में सहायता करता हैं, के एक वाहक के रूप में सेवा करता है।
4. स्वतंत्र व्यापार स्वतंत्र प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करता है तथा हानिप्रद अकुशल एकाधिकारों को रोकता है।

आलोचनाः– ये तर्क अर्द्धविकसित देशों के लिए बहुत अधिक संतोषप्रद नहीं है। इन देशों के अनुसार व्यवहार में, स्वतंत्र व्यापार में वही साम्राज्यवादी ढांचा विद्यमान है जिसने भूतकाल में विकसित देशों द्वारा अर्द्धविकसित देशों के शोषण की अनुमति दी थी। परिणामस्वरूप इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अर्द्धविकसित देश व्यापार के वर्तमान ढांचा, जो अर्द्धविकसित देशों की लागत पर विकसित देशों के हितों की रक्षा करता है, में पूर्णतया परिवर्तन करने के लिए, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अपनी आवाज को बुलंद कर रहे हैं। स्वतंत्र व्यापार के पक्ष में दिए गए उपरोक्त तर्कों के अतिरिक्त यह भी तर्क है कि यह एकाकी अर्थव्यवस्था के हानिप्रद विस्ताार को हतोत्साहित करता है। वर्तमान समय में स्वतंत्र व्यापार नीति की बजाय सरंक्षण की नीति अर्द्धविकसित देशों की व्यापारिक नीति एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गई है। ऐसा कहा जाता है कि सरंक्षण के माध्यम से एक अर्द्धविकसित देश व्यापार से अपने लाभों को बढ़ा सकता है, पूंजी निर्माण की गति तीव्र कर सकता हैं एवं औद्योगीकरण को बढ़ा सकता है।

स्वतंत्र व्यापार नीति का महत्व

1. **सामाजिक उत्पादन का अधिकतमकरणः–** अधिकतम सामाजिक कल्याण तथा समानता के प्रश्न के अतिरिक्त सामाजिक उत्पादन को अधिकतम करने के आधार पर ही स्वतंत्र व्यापार को समर्थन किया गया है। स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत मूल्य–यंत्र विनियोग के क्षेत्र में एक पथ–प्रदर्शक का कार्य करता है और यह प्रेरित करता है कि प्रत्येक देश उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण करें जिनमें उसे सापेक्षित रूप से लाभ प्राप्त होता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का आयात करें जिनमें उसे सापेक्षित रूप से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इससे व्यापार में सलंग्न समस्त

देशों की वास्तविक आय में वृद्धि होती है। इस प्रकार यदि इच्छित लक्ष्य सामाजिक उत्पादन का अधिकतमकरण है तो स्वतंत्र व्यापार नीति वैज्ञानिक रूप से न्यायसंगत है।

2. **सस्ता आयातः–** स्वतंत्र व्यापार के पक्ष में सर्वाधिक आकर्षक तर्क यह दिया जाता है कि स्वतंत्र व्यापार से आयातित वस्तुएं सस्ते मूल्यों पर प्राप्त होती है और प्रत्येक व्यक्ति उपभोक्ता के रूप में कम मूल्यों पर ही वस्तुओं को प्राप्त करना चाहता है परंतु यह चित्र का केवल एक ही पक्ष है क्योंकि यह केवल उपभोक्ता के हितों पर ही विचार करता है तथा उत्पादकों के हितों तथा रोजगार के मुख्य सामाजिक पहलुओं की अवहेलना करता है स्वतंत्र व्यापार की अनुपस्थिति की अपेक्षा स्वतंत्र व्यापार में घटकों को पुरस्कार मजदूरी, ब्याज, लगान तथा लाभ अधिक प्राप्त होगा। अतः स्वतंत्र व्यापार से उत्पादकों को भी लाभ प्राप्त होगा।

3. **प्रतियोगिताः–** स्वतंत्र व्यापार में, प्रकृति में असामाजिक, एकाधिकारें की स्थापना न होने की गारंटी रहती है। स्वतंत्र व्यापार में प्रतियोगिता होने की निश्चितता के कारण उपभोक्ता उत्पादों के एकाधिकारात्मक शोषण से सुरक्षित रहता है। परंतु स्वतंत्र व्यापार एकाधिकारों के निर्माण के विरूद्ध पूर्ण सुरक्षा प्रदान नहीं करता। स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत भी अंतर्राष्ट्रीय तथा स्थानीय एकाधिकार, प्रकट हो सकते हैं जो उत्पादन में कटौती तथा मूल्यों में वृद्धि करके उपभोक्ताओं का शोषण कर सकते हैं।

4. **समस्त राष्ट्रों के हितों की रक्षाः–** स्वतंत्र व्यापार से समस्त देशों के आर्थिक हितों की पूर्णतया सुरक्षा होती है। युद्धकाल में कच्चे माल की अधिकता की समस्या बहुत तीव्र थी परंतु बहुत से देशों, जैसे–इटली, जापान तथा जर्मनी में कच्चे माल की कमी थी। इन देशों को ''haves'' देशों के विपरीत ''have not'' कहा जाता था। इसका कारण 'तीसा' में स्वतंत्र व्यापार का समाप्त होना तथा उसके स्थान पर द्विपक्षीय व्यापार समझौता शृंखला का सामने आना था। संपूर्ण व्यापार का ढांचा विपरीत हो गया था।

5. **साधनों का इष्टतम प्रयोगः–** स्वतंत्र व्यापार से विश्व के दुर्लभ साधनों के इष्टतम उपयोग के लिए अधिकाधिक क्षेत्र प्राप्त होते हैं। अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु स्वतंत्र व्यापार नीति प्रत्येक देश के लिए उपयुक्त हैं। स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत प्रत्येक देश अपने उत्पादों को उन बाजारों में विक्रय करने योग्य हो जाता है जहां उसे उन वस्तुओं को विक्रय करने पर अधिक मूल्य प्राप्त होते हैं तथा साथ ही वह आवश्यक कच्चे माल तथा अन्य वस्तुओं का सस्ते बाजारों से क्रय कर सकता है। इस प्रकार स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत प्रत्येक देश को अपने निर्यातों का विक्रय करने तथा आयातों का क्रय करने में पूर्णतया अप्रतिबंधित स्वतंत्रता मिलती है।

निष्कर्षः– स्वतंत्र व्यापार से विभिन्न देश यह अनुभव करते हैं कि वे एक–दूसरे पर निर्भर हैं। यह विश्वबंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करता है। स्वतंत्र व्यापार के अंतर्गत विभिन्न राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में वाद–विवाद के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं। समस्त लाभों तथा हितों के बावजूद भी स्वतंत्र व्यापार नीति को या तो अंगीकृत ही नहीं किया गया है अथवा उनके द्वारा इसका परित्याग कर दिया गया हें जो इसे पहले अंगीकृत किए हुए थे। आर्थिक इतिहास का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि पिछली दो शताब्दियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार स्वतंत्र व्यापार नहीं बल्कि सरंक्षण की छत्र–छाया में फलफूला है। वर्तमान समय में स्वतंत्र व्यापार की नीति की बजाय सरंक्षण की नीति अर्द्धविकसित देशों में जहां अनेक सरंचनात्मक एवं प्रवैगिक समस्याएँ हैः– की व्यापारिक नीति एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गई है। परंतु फिर भी वर्तमान समय में स्वतंत्र व्यापार नीति का भी विशेष महत्व है।

संदर्भ ग्रंथ

1. United Nations Department of Economic Affairs Relative Prices of Exports and Imports of Undeveloped Countries, 1949, 72.
2. Charles P. Kindleberger, International Economic, Fifth Edition, 1973, 54-55.
3. Gerald M. Meier, International Trade and Development, 1963, 121.
4. Gottfried Von Haberler, The Theory of Internation Trade, English Translation, Third Impression, 1960, 5.
5. Jagdish Bhagwati, International Trade, Penguin Edition, 1960, 5.
6. Adam Smith, An Inquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations, Everyman's Edition, 401-403
7. Gottfried Von Haberler, International Trade and Economic Development, 1959, 4-10.
8. P.T. Ellsworth, International Economy, 1969, 265.
9. P.T. Ellsworth & J.C. Leith, Op. at. P, 250.
10. J.M. Keynes, The Nations and Athenoem, Ist December, 1923.
11. Friedrich List, The National System of Political Economy, 240.
12. John Staurt Mill, Principles of Political Economy, Book V., Chapter 10, Section 1.